

nie in क über P. 7, 3, 59, Vārt. 1 (vgl. jedoch अरोरकिन्, अरोरक, विरोरक). 1) med. scheinen, leuchten, hell sein (von Sonne, Feuer, Sternen u. s. w.): रोचते रोचना दिवि RV. 1, 6, 1. यः शुक्र इव सूर्यो हिरण्यमिव रोचते 43, 5. रोचत योः 4, 1, 17. अग्निः अग्ने रुको न रोचत उपको 4, 10, 5. 7, 3, 9. अग्निर्वनेषु रोचते 8, 43, 8. 3, 2, 3. उपसः शुक्रास्तनूभिः शुचयो रुचानाः 4, 31, 9. रुचे जनत सूर्यम् zum Scheinen 9, 23, 2. केनाकरकरोद्भवे AV. 10, 2, 16. यैरुन्धेरोचते कृत्तमन्यत् RV. 3, 53, 11. स्वर्णं वस्तेरुच-सामरोचि 7, 10, 2. 77, 2. रथः पवित्री रुचानः 69, 1. दिवि तारो न रोचते VĀLAKH. 7, 2, 8. 5. VS. 8, 49. AV. 5, 20, 6. 47, 1, 21. CAT. Br. 11, 3, 3, 7. सरो न रुरुचान् RV. 1, 149, 3. रुरुचे साधिकं सुभ्रापतत्ती नभस्तलात् । सौदामनीव विवध्या द्योतयती दिशस्विषा ॥ MBh. 1, 6613. रोचमानो म-हाराज विवुलोकं च गच्छति 3, 7043. सा दीप्तशस्त्रप्रवरा दैत्यानां रुरुचे (मुमुभे die neuere Ausg.) चम्: HARIV. 2659. R. 5, 10, 2. Bhāg. P. 11, 2, 27. रुचित glänzend, blank: कार्यापणा P. 1, 2, 21. Sch. यथा स्वैव रुचितः स्या-तथा धवितव्यः (धर्मः) leuchtend d. h. von der Gluth bestrahlt CAT. Br. 14, 1, 3, 33. KĀTJ. Cr. 26, 4, 4. ÇĀṆKH. Cr. 5, 9, 29. — 2) act. scheinen —, leuchten lassen: मङ्कि ज्योतीं रुरुच्युद्ध वस्तीः RV. 4, 16, 4. भरद्वाजेषु सु-रुचा रुरुच्याः 6, 33, 4. रयस्य भानुं रुरुचुः 6, 62, 2. — 3) leuchten so v. a. in vollem Glanz erscheinen, prangen: अश्वा रश्मिना प्रतिहृतो भूयिष्ठं रोचते CAT. Br. 13, 2, 3, 9. वेनेदम्य रोचते को अस्मिन्वर्णमा भरत् die Farbe, die es schmückt, AV. 11, 8, 16. यो ऽग्निं चित्वा न रोचते TS. 5, 3, 10, 3. KĀTH. 9, 16. प्राणेन रोचते CAT. Br. 7, 3, 2, 12. स्त्रियां तु रोचमानायां सर्वे तद्गोचते कुलम् । तस्यां वरोचमानायां सर्वमेव न रोचते ॥ M. 3, 62. 61. नूतेन राजते काचित्काचिद्वीतेन रोचते । वीणादिवादनज्ञानेनान्या कात्ता च रो-चते ॥ KATHĀS. 47, 113. स ऊतशोष्मणाक्रातः प्रदीप इव नारुचत् RĀGA-TAR. 4, 374. शक्रं रोचमानं स्वया अग्निा Bhāg. P. 6, 10, 18. तमया रोचते लक्ष्मोर्वाह्नी सौरी यथा प्रभा 9, 13, 40. न तथैतर्कि रोचते गृहेषु गृहसंपदः 4, 26, 14. विज्ञानं चास्य रोचते M. 4, 20. काञ्चिद्गोचतेनपदे काञ्चिद्गोच्रे च मे यशः MBh. 12, 3350. — 4) schön —, gut erscheinen, gefallen; mit dat. (P. 1, 4, 33. Vop. 5, 15) und gen.; med.: यद्यद्गोचते विप्रेभ्यः M. 3, 231. MBh. 1, 4, 243. रोचतां गमनं मच्छं तवापि mir und dir 14, 392. R. 2, 46, 10. ÇĀK. 24, 6. 71, 15. MĀLAV. 12, 6. KĀM. NĪTIS. 8, 3. Spr. 683. KATHĀS. 19, 45. 24, 141. RĀGA-TAR. 6, 51. 65. वासो मम न रोचते MBh. 1, 3327. 7441. 7550. 2, 2681. 3, 16687. 4, 13. 5, 7415. 13, 770. 14, 1881 (wo mit der ed. Bomb. मे st. मौ zu lesen ist). R. 1, 9, 33. 68, 16. 2, 21, 2. 29, 15. 30, 42. 46, 24. 82, 19. 3, 13, 11. 4, 18, 14. Spr. 1147. 2326. Bhāg. P. 3, 24, 31. 4, 30, 37. 8, 6, 31. MĀRK. P. 48, 40. PAÑKĀT. 189, 22. 190, 2. नरेन्द्रस्य तद्-रुचे वचः HARIV. 5136. रिपोर्लक्ष्मीर्मा ते रोचिष्ठ MBh. 2, 1962. किमर्थं ते — नैतद्गोचिष्यते वचः R. 5, 92, 18. act.: तद्गदस्यापि रुरोच वाक्यम् 4, 33, 26. एकात्तेन हि सर्वेषां न शक्यं तात रोचितुम् Allen gefallen MBh. 12, 3353. mit einem infin.: रामाय यौवराज्यं मे दातुमत्रैव रोचते R. GORR. 2, 2, 4. Häufig ohne Hinzufügung der Person: अन्यत्र रोचते MBh. 1, 647. 5382. R. 3, 21, 7. VARĀH. BRH. S. 104, 3. कुरुष पद्माचते was (dir) gefällt PAÑKĀT. 70, 10. यदि रोचते R. 2, 21, 21. Bhāg. P. 9, 20, 14. MĀRK. P. 16, 75. PAÑKĀT. 1, 9, 4. रोचमानं gefallend, erwünscht BHATT. 8, 73. अ० Spr. 2310. रोचमानमिवातिथिम् wie einen lieben Gast MBh. 7, 32. रुचितं UNĀDIS. 4, 185. dass.: पिच्ये स्वदितमित्येव वाच्यं गोष्ठे तु सुमुत्तम् । संप-न्नमित्यनुदये दैवे रुचितमित्यपि ॥ M. 3, 254. रुचितं यदि ते MBh. 3, 16828.

HARIV. 10217. MBh. 3, 462. 13, 774. 1476. R. GORR. 1, 74, 6. 2, 30, 36. 6, 93, 13. RĀGA-TAR. 6, 66. पदस्य रुचितं कर्तुम् MBh. 1, 7952. उभयतो रु-चिते wenn es beiderseits gefällt ÇĀṆKH. GRHJ. 1, 6. lecker UGĒVAL. zu UNĀDIS. 4, 185. — 5) Gefallen finden: न रोचे MBh. 1, 7444. mit acc.: समुदाचारसंयुक्तमिदं वाक्यमरोचताम् R. 5, 92, 15. mit dat.: रुरुचुः सर्वे वा-साय so v. a. verlangen nach HARIV. 3384.

— caus. रोचयति, ०ते, अत्ररुचत्; 1) scheinen —, leuchten lassen: कुर्यन्नुपसंमर्चयः सूर्यं कुर्यन्रोचयः RV. 3, 44, 2. 8, 3, 6. 29, 10. 9, 37, 4. 63, 7. अत्ररुचदुपसः पृश्निरग्नियः 83, 3. 49, 5. — 2) beleuchten, erhellen: स रोच-यज्जनुषा रोदसी उभे RV. 3, 2, 2. 6, 39, 4. 9, 9, 3. Bhāg. P. 2, 3, 11. 8, 2, 2. 11, 26. स्वयं लोकं रोचयस्व यावत्तमिच्छसि CAT. Br. 13, 2, 3, 11. — 3) gefallen —, angenehm machen: ब्रह्मणास्पते पतिमस्यै रोचय AV. 14, 1, 31. श्रेष्ठी पात्रे रोचयत्येव यं कामयेत तम् AIT. Br. 3, 30. तस्मै हिमाद्रेः प्रयतो तनूनां पतात्मने रोचयितुं यतस्व KUMĀRAS. 3, 16. न वरोचयतात्मानम् BHATT. 8, 64. — 4) bewirken, dass Jmd (acc.) Gefallen findet, — Verlangen fühlt nach (dat.): स्फुरदधरसीधवे तव वदनचन्द्रमा रोचयति लोचनचकारम् Git. 10, 2. — 5) (sich Etwas schön —, gut erscheinen lassen) Gefallen finden an, belieben, guthelassen, für gut finden, erwählen; med. P. 1, 3, 89. Vop. 23, 58. mit acc.: अतो भदयं न रोचये MBh. 1, 5578. न ते वाचं रो-चयते 14, 240. R. 2, 82, 14. 3, 61, 30. अथैव गमने बुद्धि रोचयस्व 13, 46. यदि स्वात्यक्तिकं वासं रोचयेत गुरोः कुले M. 2, 243. R. 2, 54, 24 (26 GORR.). न विप्रहं रोचयते वलस्यै: Spr. 3261. mit infin.: न त्वं रोचयसे नेतुं मा-मितः R. GORR. 2, 29, 22. MĀRK. P. 8, 215. Häufiger act.: गमनमरोचयन् MBh. 1, 3822. R. 1, 36, 3 (37, 3 GORR.). कृत्स्नस्य दर्शनं शक्ते रोचयामास HARIV. 3960. स साधु कैतेय इतो वासमर्जुन रोचय MBh. 4, 8, 13, 580. HARIV. 6416. R. 2, 56, 13, f. 3, 2, 1. स रोचयामास पैश्वं बन्धं प्रसह्य रत्नोभिर्वयस्कं च 5, 44, 18. वरणं रोचयति मे 7, 17, 10. पुनर्युद्धमरोचयन् MBh. 9, 1351. नहि पापमपापात्मा रोचयिष्यति पाण्डवः 1, 5741. अरोचयन्सुरा धर्मं धर्मं तत्य-जिरे ऽसुराः 3, 8492. Spr. 4331. Bhāg. P. 5, 13, 17. 14, 30. तेषां किंचित्स्म रोचय MBh. 4, 10. R. 3, 21, 8. पितरं रोचयामास दशार्थं नृपम् er erwählte sich zum Vater R. 1, 13, 2 (1 GORR.). राजानं रोचयामासुं प्रमुत्तम् 43, 1 (44, 1 GORR.). beabsichtigen, im Sinne haben: रोचयन्गणश्रेष्ठं देवानाममितौ-जसाम् HARIV. 243. 233. Verz. d. Oxf. H. 54, b, 12. pass. gefallen, erwünscht sein: तस्माद्वा रोचयतां मल्लो रामं प्रति R. 5, 77, 6. — 6) = simpl. gefal- len: नैतद्गोचयते मल्लम् R. GORR. 2, 117, 10.

— अति 1) med. durchleuchten, hinleuchten über NĪR. 3, 11. RV. 1, 94, 7. 10, 51, 3. तिरो धन्वाति रोचते 187, 2. AV. 13, 1, 36. AIT. Br. 4, 13. सर्वाः प्रजाः CAT. Br. 7, 4, 2, 10. 14, 5, 2. 9. त्रीनत्यरोच — लोकान् Bhāg. P. 1, 16, 34. — 2) med. act. heller leuchten als, überstrahlen; mit acc.. अत्यरोचश्च — भास्करं स्वेन तेजसा MBh. 3, 486. स ब्रह्मवर्चसेन सभां ब्र-ह्मर्षिगणसंनुष्टामत्यरोचत Bhāg. P. 8, 18, 18. अत्यरोचत (so die ed. Bomb.) तान्सर्वान्पृष्ट्युष्टः समागतान् MBh. 7, 1028. यथा मां नातिरोचति (नाति-वो० ed. Bomb., = न निन्दति Comm.) Bhāg. P. 3, 14, 21. — caus. 1) unangenehm empfinden: स्त्रीत्वं नैवातिरोचयन् v. l. der ed. Bomb. für नैव तिरोहयन् der ed. Calc. MBh. 5, 7427. — 2) कर्मणा Etwas in's Werk zu setzen suchen: मनसा चित्तपन्थाप कर्मणा नातिरोचयन् (नातिरोचयेत् ed. Calc.) । न प्राप्नोति तस्य फलम् MBh. 3, 3314 nach der Lesart der ed. Bomb.